मुख्य संरक्षक

डॉ. एस. पी. त्रिपाठी
कुलसचिव
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा

डॉ. रिजवान उल्ला
अपर संचालक
उच्च शिक्षा सरगुजा संभाग

संरक्षक

श्री एन. के. देवांगन
प्राचार्य,
शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर
जिला – बलरामपुर–रामानुजगंज (छ0ग0)

आयोजन समिति

शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर

1. सुश्री युगंति श्रीवास, अति. व्या., रसायनशास्त्र
2. श्री आनंद चौबे, अति. व्या., हिन्दी
3. श्री मंजीत चौबे, अति. व्या.,हिन्दी
4. श्री सत्यम गुप्ता, अति. व्या.,भौतिकशास्त्र
5. श्री उमेश कुमार गुप्ता, अति. व्या.,प्राणीशास्त्र
6. श्री विरेन्द्र विक्रम, अति. व्या.,वाणिज्य
7. श्री पूनम साय, अति. व्या.,कम्प्युटर विज्ञान
8. श्री शैलेष कन्नौजिया, अति. व्या. समाजशास्त्र
9. श्री पिन्टु मण्डल, अतिथि, ग्रंथपाल

नवीन शासकीय महाविद्यालय रनहत

1. डॉ. सुनिता सिंह, अति. व्या., हिन्दी
2. डॉ. एकता एक्का, अति. व्या., अर्थशास्त्र
3. श्रीमती चंचला गुप्ता, अति. व्या., वनस्पति शास्त्र
4. श्री तिरिथ काटले, अति. व्या., भुगोल
5. सुश्री रोजिना खातून, अति. व्या., राजनितिशास्त्र
6. सुश्री रश्मि मित्तल, अति. व्या., वाणिज्य
7. सुश्री क्षिप्रा खाखा, अति. व्या., प्राणीशास्त्र
8. सुश्री मुनमुन आगर, अति. व्या., अंग्रेजी

संयोजक
एन. के. सिंह, सहायक
प्राध्यापक, वनस्पतिशास्त्र

सह – संयोजक
डॉ. अश्वनी कुमार विश्वकर्मा,
क्रीड़ाधिकारी
श्री योगेश कुमार राठौर,
सहायक प्राध्यापक, इतिहास

तकनीकी सहयोग
श्री ओम शरण शर्मा,
सहायक प्राध्यापक, कम्प्यूटर विज्ञान

आयोजन सचिव
डॉ. अर्चना गुप्ता,
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

आयोजन सह – सचिव
श्री विवेक सिंह आयाम,
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य

तकनीकी सहयोग
श्री पूनम साय,
अतिथि व्याख्याता, कम्प्यूटर विज्ञान

परामर्श मण्डल

1. डॉ. ए. ए. खान, प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग,
शासकीय दानवीर तुलाराम पीजी महाविद्यालय उतई
2. डॉ. एच. एन. दुबे, प्राचार्य
शासकीय रेवती रमन मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर
3. डॉ. अनिल सिन्हा
सहा. प्रा. भूगोल विभाग, राजीव गांधी शा0 स्ना0 महाविद्यालय अम्बिकापुर
4. डॉ. एस. एन. पाण्डेय
अंग्रेजी विभाग, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अम्बिकापुर
5. डॉ. सी. एल. पाटले
प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय सनावल
6. डॉ. एस. के. टोप्पो, प्राचार्य
शसकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर जिला : सरगुजा
7. श्री अशोक कुमार पैकरा, प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, कुसमी, बलरामपुर
8. श्री विनायक साय, प्राचार्य
शासकीय बालासाहेब देश पाण्डे महाविद्यालय कुनकुरी, जशपुर
9. डॉ. चन्द्रशेखर सिंह, सहायक प्राचार्य, हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय घरघोड़ा : रायगढ़
10. श्री जे. आर. पैकरा, प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय चांदनी बिहारपुर जिला : सूरजपुर
11. श्रीमती रोज लिली बड़ा, प्राचार्य
शासकीय लरंगसाय अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामानुजगंज
12. डॉ. पुनीत कुमार राय, प्राचार्य
अरूण प्रताप सिंहदेव शासकीय महाविद्यालय शंकरगढ़, बलरामपुर
13. श्री सुधीर सिंह, प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर, बलरामपुर
14. श्री धरमपाल साहू, प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय लखनपुर, जिला सरगुजा
15. श्री अगस्टीन कुजूर, प्राचार्य
शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, बलरामपुर
16. डॉ. सत्येन्द्र कश्यप, प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय रामचन्द्रपुर, बलरामपुर
17. डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय, सहा. प्राध्यापक
हिन्दी राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर
18. श्री विनीत कुमार गुप्ता, सहा. प्राध्यापक
राजनीतिशास्त्र राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर

आमंत्रण

शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर
एवं
नवीन शासकीय महाविद्यालय रनहत
जिला – बलरामपुर–रामानुजगंज (छ0ग0)
के तत्वावधान में आयोजित

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (Online And Offline Mode)

25 अक्टूबर, 2024

“जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत : ऐतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान”

आयोजक
आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)
शासकीय महाविद्यालय बलरामुपर (छ0ग0)
एवं
नवीन शासकीय महाविद्यालय, रनहत
संपोषक
उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

कार्यक्रम स्थल
शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर
जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ0ग0)

आमंत्रण

मान्यवर महोदय/महोदया,

अत्यंत प्रसन्नता के साथ सूचित किया जाता है कि **आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर एवं नवीन शासकीय महाविद्यालय रनहत** के तत्वाधान में दिनांक 25 अक्टूबर, 2024 को **"जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत, एंतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान "** विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। सभी इच्छुक प्रतिभागियों से अनुरोध है कि इस संगोश्ठी में सम्मिलित होकर

महाविद्यालय का परिचय :–

शासकीय महाविद्यालय बलरामपुर की स्थापना छत्तीसगढ़, सरगुजा संभाग के जिला मुख्यालय बलरामपुर के जनजातीय बाहुल्य जिला बलरामपुर में 2008 में हुई थी। महाविद्यालय में अध्यनन करने वाले अधिकांश छात्राएं ग्रामीण परिवेश एवं अनुसूचित जन जाति वर्ग से आते हैं। खनिज व वन संपदा से समृद्ध बलरामपुर जिला की सीमाएं उत्तरप्रदेश और झारखण्ड को स्पर्श करती है। महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं, शोधार्थियों के मध्य जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत को परिचित कराने जनजातीय समाज के ऐतिहासिक योगदान, उनके जीवनमुल्यों, और जनजातीय समाज की आध्यात्मिक धरोहर के प्रति जागरूकता के लिए अकादमिक कार्यक्रम आयोजन किया जा रहा है। बलरामपुर, संभाग मुख्यालय अम्बिकापुर से 80 कि.मी., गढ़वा से 75 कि.मी., रायपुर से 420 कि.मी., बिलासपुर से 310 कि.मी. है। इन स्थानों से बलरामपुर सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। तातापानी, डीपाडीह व पवईफाल बलरामपुर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल हैं।

संगोष्ठी का उद्देश्य:

भारत के जनजातीय समाज का इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण एवं समृद्ध है। भारत के जनजातीय समाज के इतिहास, उनकी सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक संरचनाओं और आध्यात्मिक आस्थाओं की महत्ता पर केंद्रित है, जनजातीय समाज ने सदियों से भारतीय सभ्यता का हिस्सा बनते हुए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और सामुदायिक भावना को बनाए रखा है। इस शोध संगोष्ठी का उदेदश्य जनजातीय समाज के ऐतिहासिक सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान को व्यापक रूप से समझना है। ऐतिकासिक दृष्टिकोण से, उन्होंने संघर्षों के बीच अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा की। सामाजिक दृष्टिकोण से उन्होंने सामूहिकता, सह–अस्तित्व और पर्यावरण संरक्षण की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ दी। आध्यात्मिक रूप से, उनका प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान और जीवन दर्शन आज के पर्यावरणीय संकट के संदर्भ के विशेष रूप से प्रासंगिक है।

इस संगोष्ठी के माध्यम से जनजातीय समाज के ऐतिहासिक योगदान का अध्ययन सामाजिक संरचनाओं का विश्लेष्ण, आध्यात्मिक आस्थाओं का शोध, संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण आधुनिक समाज के लिए प्रेरणा, जनजातीय समाज की समसामयिक चुनौतियों का अवलोकन एवं जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत से आज के सामातिक और सांस्कृतिक परिवेश जैसे विषयों पर देश भर के स्थापित और प्रतिष्ठित विद्वान विमर्श करेंगे। इस चर्चा–परिचर्चा में अवश्य ही अनेक उपयोगी निष्कर्श आयेंगें। जिनके माध्यम से शोध, शिक्षा और चिंतन मन हेतु कई आयाम पर व्यापक कार्य के मार्ग का अन्वेषण हो सकेगा। इन्ही विशेष संदर्भों व मुद्दों को ध्यान में रखते हुए आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के तत्वधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 25 अक्टूबर 2024 को '' जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत – ऐतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान'' विष्य पर किया जा रहा है। इस आयोजन के विचारविमर्श से शिक्षाविद् शोधार्थी और विघार्थी अवश्य लाभान्वित होंगे।

संगोष्ठी की महत्ताः

इस एक दिवसीय अंतः विषय संगोष्ठी के माध्यम से जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत को समझने, ऐतिहासिक चेतना का विकास, सामाजिक सदभाव् और समावेशिता, पर्यवरणीय संरक्षण की प्रेरणा, संस्कृतिक धरोहर का संरक्षण, वर्तमान चुनैतियों के समाधान, शैक्षणिक और बौद्धिक योगदान में अंत र्निहित वैज्ञानिक कारण, तार्किक क्षमता, अनुसंधान संभावनाओं के नये आयाम विकसित किए जाएंगे। इससे छात्र, शोधकर्ता और बुद्धिजीवी निश्चित रूप से जनजातीय समाज के गौरवशाली अतीत के माध्यम से जनजातीय समाज की प्राचीन और समृद्ध परम्पराओं का अध्ययन, साथ ही उनके ज्ञान, जीवनमूल्य और सांस्कृतिक धरोहर की वर्तमान और भविष्य में प्रासंगिकता पर बहुत कुछ नया सीख सकेंगे और अपने ज्ञान का विस्तार कर सकेंगे। यह आयोजन एक ऐसा मंच प्रदान करेगा, जहाँ विद्वानों का गहन विश्लेषण और वैचारिक अभिव्यक्ति शैक्षणिक संस्थाओं के प्रतिभागियों के ज्ञान को अद्यतन करेगी। आज के समय की आवश्यकताओं के अनुसार भौतिक संसाधन और प्रगति आवश्यक है, लेकिन हमारी विरासत और निरंतर विकास और समृद्धि को संरक्षित करने से ही हमारे समाज का विकास संभव है।

सम्मेलन में शोध प्रपत्र हेतु कुछ विचारणीय बिंदु/उपविषय :

1. जनजातीय विद्रोह और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान।
2. प्राचीन भारतीय इतिहास में जनजातीय समाज की भूमिका।
3. जनजातीय कला, शिल्प और संगित एक सांस्कृतिक धरोहर।
4. जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विविधता और उसकी प्रासंगिकता।
5. जनजातीय समाज के त्यौहार परम्पराएं और धार्मिक अनुष्ठान
6. जनजातीय समाज में स्त्री की भूमिका और अधिकार।
7. प्रकृति की पुजाः जनजातीय समाज का आध्यात्मिक दृष्टिकोण।
8. पर्यावरण संरक्षण में जनजातीय समाज की भूमिका।
9. जनजातीय समाज पर शहरीकरण और आधुनिकीकरण का प्रभाव।
10. वनाधिकार और जनजातीय समाज के भूमि अधिकार।
11. शिक्षा और रोजगार में जनजातीय समाज की वर्तमान स्थिति।
12. जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ।
13. आदिवासी क्षेत्रीय विकास समस्याएँ और समाधान।
14. अंतराष्ट्रीय मानवाधिकार और जनजातीय समाज का अधिकार संरक्षण।
15. प्राचीन भारतीय दर्शन में जनजातीय परंपराओं का प्रभाव।
16. योग, आयुर्वेद और जनजातीय समाज की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली।
17. पारंपरिक पहवाना, आभूषण और अन्य संस्कृतिक प्रतीक।
18. जनजातीय समाज की स्थापत्य कला और निर्माण तकनीकें।
19. प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की सीख।
20. जनजातीय समाज के अधिकार ओर सरकार की नितियाँ।
21. जनजातीय भाषाओं और बोलियों का संरक्षण।
22. जनजातीय साहित्य और उसका भारतीय साहित्यिक परंपरा में योगदान।
23. मौखिक परंपराएँ, जनजातीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर।
24. जनजातीय विकास छत्तीसगढ़ के संदर्भ में।

प्रतिभागिता शुल्क (पंजीयन)

क्र.	प्रतिभागी	शुल्क
1.	प्राध्यापक	500
2.	शोधार्थी	300
3.	विघार्थी	200

शोध पत्र एवं सारांश आमंत्रणः

संगोष्ठी के विषय से सम्बद्ध किसी भी पक्ष पर शोधपत्र आमंत्रित है। शोधपत्र के लिए अधिकतम शब्द सीमा 3000 एवं शोध सारांश के लिए 500 है। शोधपत्र एवं सारांश **हिन्दी फॉन्ट यूनीकोड साईज 14** अथवा अंग्रेजी में **Times New Roman** फॉन्ट 12 में होनी चाहिए।

चयनित शोधपत्रों को ISBN के साथ पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा। पुस्तक प्राप्ति के लिए रू. 500 अतिरिक्त शुल्क देय होगा। शोधपत्र एवं सारांश 20 अक्टूबर 2024 तक MS Word फाईल एवं पीडीएफ फाईल में इस पते पर मेल करें – **gcdhartiabaseminar@gmail.com** नोट – प्रतिभागियों के जलपान, भोजन का प्रबंध आयोजक संस्था द्वारा किया जायेगा। आवास का प्रबंध एवं मार्गव्यय का वहन प्रतिभागियों को स्वयं करना होगा।

Bank Details:-

Account Number : 20132936993

Bank Name : State Bank Of India

Branch : Balrampur (C.G.)

IFSC Code : SBIN0015464

Account Bar Code

पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रमाण–पत्र दिए जाएंगे।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

डॉ0 एन. के. सिंह, संगोष्ठी संयोजक, मो. 8878232659

डॉ. अश्वनी कुमार विश्वकर्मा, संगोष्ठी सह - संयोजक

मो. 9580145763

श्री योगेश कुमार राठौर, संगोष्ठी सह संयोजक, मो. 8085320561

ऑनलाईन पंजीयन फार्म लिंक - https://forms.gle/N8REGAKasPqvJKcg7

व्हाट्सएप्प ग्रुप लिंक - https://chat.whatsapp.com/BHhIx82PfOzFldPR26pMej